General Psychology

Paper- I

B.A. I (Hons.)

सूझ सिद्धांत की सीखने की आलोचनात्मक व्याख्या दें।

(Critically Explain Insight Theory of Learning)

इस theory का प्रतिपादन विशेष रूप से दो psychologists, **Kohler** and **Kofka** द्वारा किया गया। जैसा की नाम से ही स्पष्ट है, इस सिद्धांत के अनुसार प्राणी सूझ या अंतर्दृष्टि के आधार पर सीखता है। जब भी प्राणी किसी प्रक्रिया को सीखता है; वह सीखने से सम्बंधित पहलुओं को नए ढंग से समझने की कोशिश करता है। इसका परिणाम यह होता है की वह परिस्थिति के विभिन्न पहलुओं को नए ढंग से प्रत्यक्षण कर के संगठित करता है ताकि समस्या का समाधान आसानी से हो सके। जब वह परिस्थिति के भिन्न भिन्न पहलुओं को नए ढंग से संगठित कर के प्रत्यक्षण करता है तो इससे उसमें अचानक सूझ उत्पन्न होती है। जिसे कुछ मनोवैज्ञानिकों ने **"अहा! अनुभव"** भी कहा है। प्राणी में जैसे ही सूझ उत्पन्न होती है वह समस्या का समाधान कर लेता है, तथा तुरंत सही अनुक्रिया करता है या उसे फिर करना सीख लेता है। अतः सूझ सिद्धांत का सार तत्त्व यह है की प्राणी किसी अनुक्रिया को प्रयत्न एवं भूल के आधार पर नहीं बल्कि सूझ के आधार पर सीखता है तथा सूझ का अनुभव व्यक्ति में अचानक होता है।

Kohler and **Kofka** ने अपने इस सिद्धांत के समर्थन में कई तरह के पशुओं पर प्रयोग किया है, जिसमे वनमानुष, बन्दर, मुर्गी तथा कुत्ते आदि पर किये गए प्रयोग मुख्य हैं। इसमें से सुल्तान नामक वनमानुष पर किया गया प्रयोग सबसे अधिक लोकप्रिय है। जिसका वर्णन यहां अपेक्षित है। सुल्तान नामक वनमानुष पर किये गए निम्नांकित दो प्रयोग काफी लोकप्रिय हुए हैं-

1)छड़ी समस्या पर प्रयोग (experiment on stick problem)

2) बॉक्स समस्या पर प्रयोग (experiment on box problem)

1) छड़ी समस्या पर प्रयोग-

यह प्रयोग सुल्तान नामक वनमानुष पर किया गया। वनमानुष भूखा था जिसे पिंजड़े में बंद कर दिया गया था। पिंजड़े में दो छाड़ियाँ थी। पिंजड़े के बाहर कुछ केले रख दिए गए थे। केले की दूरी पिंजड़े से इतनी अधिक थी की वनमानुष का पंजा वहाँ तक पहुँच नहीं सकता था। वनमानुष केले को प्राप्त करने का प्रयास करने लगा। इस प्रयास में वह पिंजड़े से कभी हाँथ निकालता था तो कभी पैर। परन्तु सफलता नहीं मिलने पर वह निराश हो कर बैठ गया और पिंजड़े में रखी दो छड़ियों के सहारे असावधानी पूर्वक खेलने लगा। खेल के सिलसिले में दोनों छड़ियाँ आपस में जुड़ गयीं। वनमानुष में उसके बाद अचानक उत्साह देखा गया और बाहर table पर रखे केले को इस लम्बी छड़ी से खींच कर वह खा गया। जब बाद में इस प्रयोग को दोहराया गया तब सुल्तान ने तुरंत ही दोनों छड़ियों को जोड़ कर पिंजड़े के बाहर table पर रखे केले को भीतर कर के खा लिया।

उपर्युक्त प्रयोग के वर्णन से समस्या के समाधान की सूझ का विकास वनमानुष में क्रमशः तीन अवस्थाओं में हुआ है-

क) सूझ के विकास की प्रारंभिक बेमतलब के प्रयास या चेष्टा के बाद प्राणी निष्क्रिय हो कर अपने वातावरण में उपलब्ध वस्तुओं के साथ निरुद्देश्य ढंग से खेलने का प्रयास करता है।

ख) इसी निरुद्देश्य ढंग से खेलने के क्रम में प्राणी में सूझ के आगमन का अनुभव होता है, जिसकी अभिव्यक्ति "अहा! अनुभव" के रूप में होती है। यह सूझ के विकास की दूसरी अवस्था है।

ग) सूझ के विकास की अंतिम और तीसरी अवस्था में प्राणी की समस्या के समाधान की जो सूझ मिलती है, उसका उपयोग कर वह समस्या का समाधान करने की चेष्टा करता है।

सूझ सिद्धांत एक महत्वपूर्ण सिद्धांत है, फिर भी इसकी कुछ आलोचनाएं की गयी हैं। यह आलोचनाएं निम्नांकित हैं-

1) **Kohler** तथा **Kofka** ने सूझ को एक अचानक होने वाला अनुभव माना है। मनोवैज्ञानिकों ने इसकी आलोचना की है और कहा है की सूझ क्रमिक होती है तथा की मात्रा काम या अधिक हो सकती है इस पर टिप्पणी करते हुए **Dunker**, 1945 ने कहा है **"सूझ क्रमिक होती है तथा इसमें मात्राएँ होती हैं।"**

2) सूझ सिद्धांत में की गयी व्यवस्था से यह स्पष्ट है की इसमें सीखने के सूझ के अलावा अन्य कारक जैसे- अभ्यास के महत्व को स्वीकार नहीं किया गया है परन्तु सच्चाई यह है की कुछ अनुक्रियाओं या कार्यों का सीखना इस प्रकार का होता है जिसमे सूझ तथा अभ्यास दोनों की ज़रुरत पड़ती है। टाइप सीखना, भूल भुलईया सीखना, आदि ऐसे ही सीखने के उत्तम उदाहरण हैं।

3) कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है की insight theory द्वारा सभी तरह के प्राणियों के सीखने की व्याख्या नहीं हो पाती है। जैसे- छोटे छोटे पशु, कुत्ते, बिल्लियों, चूहों तथा मंद-बुद्धि के व्यक्तियों के सीखने की व्याख्या सूझ सिद्धांत द्वारा नहीं होती है।

4) कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है की **Kohler** तथा **Kofka** द्वारा निर्मित प्रयोगात्मक परिस्थिति ही पक्षपातपूर्ण थी जिसमे वनमानुष का सूझ द्वारा सीखना ज़्यादा आसान एवं संभव था।

निष्कर्षता यह कहा जा सकता है की कुछ बिंदुओं पर यद्यपि सिद्धांत की आलोचना की गयी है फिर भी यह सिद्धांत मनोवैज्ञानिकों के बीच अपनी सरलता एवं सुगमता के कारण अधिक लोकप्रिय है।

-**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology